International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय दर्शन में सामाजिक मूल्य

नरेन्द्र सिंह
शोध छात्र
दर्शन शास्त्र विभाग
सीद्धो–कान्हू विश्वविद्यालय दुमका

भारतीय समाज अपनी संस्कृतियों को लेकर दार्शनिक भावभूमि से जूड़ा हुआ है। दार्शनिक विचारधाराओं का मूल स्त्रोत वेद हैं, जो भारतीय जीवन दर्शन से जूड़ा हुआ है। चारों वेद के तीन–तीन भाग है– मंत्र– संहिता , ब्राह्मण, और उपनिषद्। उपनिषद् में वैदिक व्याख्याएँ हैं, जहाँ से दर्शन का आगमन हुआ। वेदों के अंश हमारे जीवन से सम्बद्ध है। गौतम मुनि का न्याय दर्शन, कणाद का वैशेषिक–दर्शन, कपिल का सांख्य–दर्शन, पतंजलि का योग–दर्शन, जैमिनी का पूर्व मीमांसा–दर्शन और वादरायण का उत्तर मीमांसा–दर्शन आदि से दर्शन वेदों में आस्था रख्ते है। किसी न किसी रूपों में यह हमारे समाज और हमें सम्मुन्नत बनाने में स्थूल और सूक्ष्म रूप से योगदान करते है। एक सभ्य प्राणी होन के नाते इनमें आस्था रखना आवश्यक माना जा सकता है। ''वैदिक ऋषि ने पंचकोशमय देह के पार सृष्टि के विलास को देखा। सृष्टि–विलास की इस क्रीड़ा में भाग लेतीं शक्तियों का साक्षात्कार किया और इस विलास से उत्पन्न नाद का श्रवण किया। इन्हीं अरूप शक्तियों की क्रीड़ा पर मुग्ध होकर जब ऋषियों ने उनका वर्णन किया, तो यह स्तुति स्वतः ही मानवीकृत होती गई।''[1]

समाज और सामाजिक व्यवस्था की ही अनिवार्य और सुन्दर कल्पना है। आज भी परिवेश के आधार पर इसका अपना रूप है। समाज की महत्ता मनुष्य पर ही निर्भर होती है। वह जीवन और जगत् पर चिंतन करता है। इसलिए अरस्तु ने भी मनुष्य को एक तर्कयुक्त प्राणी माना है। जीवन की विशिष्ट गतिविधियों का आधार मानवीय विचार ही है। अर्थात् मानवीय विचार के आधार पर ही जीवन की गतिविधियाँ संचालित होती है। मानवीय समाज के कार्य–कलापों के मूल में यहाँ की संस्कृति और धर्म का बड़ा योगदान होता है, क्योंकि '' धर्म से ही लोक का धारण (या स्थिति) होता है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि जाहँ–जहाँ मानव–समाज है, वहाँ–वहाँ किसी–न–किसी रूप में, धर्म की अवधारणा पायी जाती है।''[2]
भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने धार्मिक अवधारणाओं को स्वीकार किया है।

प्रत्येक समाज में दो तरह के लोग होते हैं– उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग, शोषक और शोषित, शिक्षित एवं अशिक्षित। सुशिक्षित लोग ही समाज में 'सामानता लाने की चेष्टा करते हैं', क्योंकि वे सामाजिक मूल्य को पहचानते हैं। प्रगतिवादी विचारधारा का उन्नयन भी इन्हीं के माध्यम से होता है। सामाज में सुसंगठित व्यवस्था कायम करने के निमित्त हमें दर्शन का सहारा लेना ही पड़ता है। हमारी संस्कृति में परम्परावादी ग्रंथों का बड़ा योगदान है। कुछ लोग

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ऐसे होते हैं जो हमारे सांसकृतिक ग्रंथों में वर्णित एक ही पक्ष को देखते हैं, लेकिन दार्शनिक भावधारा के दूसरे पक्ष से वे प्रायः अनभिज्ञ होते हैं। इन्हीं परम्परावादी ग्रंथों से हम समाधान भी ढूंढ़ सकते हैं। आवश्यकता है सामाज में सम्यक् विचारों को साझा करने वालों लोगों की।

भारतीय दर्शन मानवीय सन्दर्भ को उदारवादी दृष्टि से देखता है। यही कारण है कि यहाँ के समाज में नैतिक मूल्यों को अधिक प्रश्रय दिया जाता है। सामाज में नैतिकता का प्रमुख स्थान है, इसलिए भारतीय दर्शन में 'न्याय–दर्शन' का भी विशेष महत्त्व है। **नीयते प्राप्यते विवाक्षितार्थसिद्धिर्येन इति न्यायः,**अर्थात् जिसके द्वारा या जिस साधन से हमें किसी विषय की प्राप्ति हो जाए अथवा जिसकी सहायता से किसी निश्चित सिद्धांत तक पहूँचा जा सके या निष्कर्ष निकाला जा सके, उसी का नाम न्याय है।'' 3 व्यक्ति अथवा समाज के दुःखों का अंत किस प्रकार हो? निदान खोजना ही न्याय–दर्शन का उद्देश्य है। अज्ञान अथवा अविद्या का परित्याग, न्यायशास्त्रादि का अध्यन्न–मनन आदि से दुःखों का अंत स्वाभाविक है। भारतीय समाज की उन्नति भी इन्हीं आधारों पर अवलंवित है। मिथिला के गौतम ऋषि द्वारा प्रचारित इस दर्शन मानव और समाज की उन्नति के निमित्त विविध तत्त्वों पर विचार किया गया है, यथा–संशय, प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धांत, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितंडा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रह–स्थान। सामाजिक सन्दर्भो में इनकी व्याख्याकी जा सकती है।

'वैशेषिक–दर्शन' में भी जगत् पर विचार किया गया है। कणाद ऋषि द्वारा विरचित सुत्रों को 'वैशेषिक–दर्शन' कहा गया है। इस दर्शन में सात पदार्थों को विशेष महत्त्व दिया गया है। अर्थात् वैशेषिक–दर्शन में जगत् की वस्तुओं के लिए 'पदार्थ' शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे 'परमाणुवाद' का सिद्धांत भी कहा गया है। वैशेषिक–दर्शन में मोक्ष पाने के लिए 'कर्मवाद' को प्रमुख माना गया है। उनके अनुसार हमारी क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं–ऐच्छिक और अनैच्छिक। ऐच्छिक क्रियाओं का संबंध तो नैतिकता से ही है। समाज को समाज तभी कहा जा सकता है, जब वहाँ नैतिकता भी विद्यमान हो। एक सभ्य प्राणी होने के नाते मनुष्य को नैतिकता का विशेष ख्याल रखना होता है। अर्थात् सामाजिक नैतिकता की अवधारणाओं के मूल में सामाजिक मूल ही निहित है।

कपिल मूनी द्वारा विरचित सांख्य–दर्शन द्वैतवादी–दर्शन है, क्योंकि यह प्रकृति और पुरूष को मौलिक तत्व मानता है। समाज में दोनों का विशेष महत्त्व है, परन्तु सांख्य–दर्शन में विवेक–ज्ञान की प्रधानता है। उनका मानना है कि 'प्रकृति–पुरूष के विषय में अज्ञान होने से यह संसार है और जब हम दोनों को जान लेते हैं कि पुरूष प्रकृति से भिन्न है तथा स्वतंत्र है, तब हमें मोक्ष की प्राप्ति होती है।'[4] इसमें सत्वगण, रजोगण एवं तमोगुण पर अधिक प्रामाणिकविचार किया गया है। मनुष्य में इन गुणों का होना अपरिहार्य है। सांख्य–दर्शन में ईश्वर, नीति, मुक्ति एवं धर्म पर विचार किया गया है। मनुष्य और सामाजिकता से इसका

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अटूट संबंध है।

मीमांसा–दर्शन में कर्त द्वारा समस्याओं का निदान किया जाता है, इसलिए इसमें चिंतन–क्रिया प्रमुख मानी जाती है। वेदों में वर्णित कर्मकाण्ड को मीमांसा दार्शनिक, धर्म मानते हैं। इस प्रकार मीमांसा–दर्शन में कर्मकाण्ड को विशेष महत्त्व दिया जाता है। नित्यकर्म,नैमित्तिक कर्म, काम्यकर्म एवं निषिद्धकर्म आदि तो सामाजिक सरोकार से ही सम्बद्ध हैं। सामाजिक मूल्य मनुष्य की सफलता–असफलता सुख–दुःख, ऊँच–नीच और व्यवहार पर आधारित है, क्योंकि हम सामाजिक मूल्यों के निर्धारण में जिन तथ्यों का आकलन करते है, उसके साथ हमारा धार्मिक विश्वास भी होता है। अर्थात् हम समाज को धर्म विशेष से जोड़कर रखते हैं। हमारा दार्शनिक एवं वैदिक ग्रंथ इसका प्रबल साक्ष्य है। सामाजिक सरोकार में व्यवहार और कर्म की प्रधानता होती है। अपने सकारात्मक व्यवहार और अपनी कर्मठता के बल पर सामाजिक मूल्यों को प्रतिष्ठापित किया जाता है। ऋगवेद में कर्म की प्रधानता है।

समाज तभी बनता है, जब उसमें एकत्व की भावना होती है। हमारा वैदिक ग्रंथ इसका पक्षधर है। सामाजिक मूल्यों का संबंध किसी युग विशेष, देश विशेष या जाति–वर्ग विशेष से न होकर, मानव–विकास एवं कल्याण की अंतश्चेतना से है। पारस्परिक एकता, सहयोग, सद्भाव एवं संगठन आदि के अनेक मूल्य वेद–मंत्रों में सुरक्षित हैं। यद्यपि समय परिवर्त्तन क साथ–साथ मानव की मान्यताएँ एवं सिद्धांत परिवर्त्तित होते रहते हैं, किन्तु वैदिक वाङ्मय के अधिकांश मूल्य आज भी शाश्वत, अपरिवर्त्तित एवं प्रगति में सहायक हैं, जिनके अभाव में मानव–जीवन अधूरा सा प्रतीत होता है। उदात्त् भावानाओं से भावित वैदिक धर्म विषमता रहित, शोषण मुक्त, मानवीय मूल्यों से युक्त आदर्श–समाजकी संकल्पना को चरितार्थ कर सकता है। ’’5

वेदान्त–दर्शन भारतीय आध्यात्मशास्त्र में प्रमुख है। वेदों का सार ही उपनिषद्है, इसलिए उपनिषद् को 'वेदान्त' कहा गया है। भारतीय मनीषियों ने वेदांत की वृहद् व्याख्या की है। इससे इनेक सम्प्रदाय उत्पन्न हुए। साथ ही इसके बहुत सारे हाष्यकार भी हुए। मुख्य रूप से अद्वैवतवाद, भेदाभेदववद, विशिष्टाद्वैतवाद, द्वैवतवाद,द्वैताद्वैतवाद,शैव–विविष्टाद्वैतवाद,अनित्यभेदाभेदवाद,भाष्कराचार्य, रामानुज,माधवाचार्य,निम्बकाचार्य,श्रीकंठ, श्रीपति,बल्लभाचार्य, विज्ञान भिक्षु,बलदेव इत्यादि प्रमुख रहे हैं। इन सब का सिद्धांत लोकसम्मत रहा है। सत्य और ब्रह्म की सत्ता से अवगत होना ही जीवन की सार्थकता है। शंकराभाष्य के अनुसार जो सत् है, वही चित् है और जो चित् है, वही सत् है। सत् ही ज्ञान है, ज्ञान ही सत् है। ब्रह्म भी आनंद ही है।

उपनिषद् में ब्रह्म दो रूपों में दिखया गया है– सगुण को अपरब्रह्म तथा निर्गुण को परब्रह्म कहा गया है। आचार्य शंकराचार्य ने निर्गुण ब्रह्म को मानते हुए भी ब्रह्म को 'शून्य

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नहीं माना है। वह तो ' सर्वव्यवहारगोयरातीत' है। शंकरचार्य के अनुसार ' जगत की सृष्टि सगुण ब्रह्म की माया–शक्ति होती है। साधारण लोग अज्ञानता के कारण ब्रह्म के निर्गुण रूपों को नहीं पहचान पाते। व्यावहारिक दृष्टिकोण के अनुसार यह जगत वास्तविक है। इसलिए इस संसार की सृष्टि का कार्य ईश्वर को सौंपा जाता है। ''[6]

डॉ. राधाकृष्णान ने माना है कि दर्शन का उद्देश्य जीवन की व्याख्या नहीं, बल्कि जीवन कोबदलना है। यह बदलाव सामाजिक बदलाव भी हो सकता है, लेकिन डॉ. बलदेव उपाध्याय ने दर्शन को जीवन माना है। प्लेटो के मंतव्य मे दर्शन सर्वश्रेष्ठ जीवन–संगीत है। सम्पूर्णानन्द के विचार में 'दर्शन जगत् को समझने और उसको उन्नत बनाने का श्रेष्ठत साधन है।' बहरहाल, जीवन और जगत् के माध्यम हमारा समाज ही है। अतः जब जीवन का मूल्य निर्धारित होता है, तब सामाजिक–मूल्य का अर्थ स्वतः स्पष्ट हो जाता है। संसार की सृष्टि का आधार तो मनुष्य और समाज ही है। यहाँ भी हम सामाजिक संदर्भ और मूल्य को देख सकते हैं। रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत–दर्शन और बौद्ध–दर्शन में भी कहीं–न–कहीं सामाजिक मूल्य तथा सामाजिक सरोकार की भावनाएँ देखी जा सकती हैं।

संस्कृत वाङ्मय की परिधि में आने वाले सारे ग्रन्थों में मानवीय और सामाजिक मूल्यों को देखा जा सकता है। अतः सामाजिक मूल्य के परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन की अर्थवत्ता स्वंसिद्ध होती है।

सदंर्भ–सूची

1. भारतीय दर्शन में क्या है? डॉ.– प्रवेश सक्सेना, पुस्तक महल, दिल्ली–110006, संस्करण 2005, पृ0–13
2. दर्शन धर्म–अध्यात्म और संस्कृति– डॉ. देवराज, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, लोदी रोड, नई दिल्ली, सं0–2005, पृ.– 85
3. भारतीय दर्शन में क्या है, – डॉ.– प्रवेश सक्सेना,पृ0–28
4. भारतीय दर्शन में क्या है, – डॉ.– प्रवेश सक्सेना,पृ0–62
5. संस्कृत वाङ्मय और मानव–मूल्य, सं0– डॉ0 कृष्णचन्द्र चौरसिया, आलेख–वैदिक वाङ्मय में वर्णित मानवीय–मूल्यों की प्रासंगिकता– डॉ0 रवीन्द्र नारायण चौरसिया, पृ0–118–119, भारतीय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स, फैजाबाद (उ0प्र0)
6. भारतीय दर्शन में क्या है, – डॉ.– प्रवेश सक्सेना,पृ0–128